'समवेत शिखर' - रायपुर,गुरुवार १० अक्टूबर १९९१

साज़ और अवाज़ के सुरों में डूबी एक रात

दिल जीतने वाला कभी हारा भी तो होगा

कविश हैदरी द्वारा

रायपुर। "स्वर संध्या' द्वारा महाराष्ट्र मंडल में क्षेत्र के जाने माने ग़ज़ल गायक अश्विनी वर्मा द्वारा ग़ज़ल गायन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। ग़ज़ल गायक तथा उनके सहयोगियों का स्वागत व परिचय के बाद गायन का शुभारंभ प्रसिद्ध शायर नरेश कुमार शाद की एक ग़ज़ल से हुआ। गांधी जयंति तथा शास्त्री जयंति के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में श्री वर्मा ने अपने स्व.पिता रतन वर्मा का भी स्मरण किया क्योंकि इत्तेफाक से उसी दिन उनके स्व. पिता का श्राद्ध भी था। यह भी संयोग की बात रही कि गुरू-शिष्य परंपरा के अंतर्गत उनके साथ विभिन्न साज़ों पर संगत करने वाले कलाकार एक ही परिवार के लोग थे। जहां तक श्री वर्मा की गायकी का प्रश्न है, वे एक मंजे हुए गायक हैं। शास्त्री संगीत पर आधारित उनकी गायकी संगीत प्रेमियों का दिल मोह लेती है लेकिन ग़ज़लों के कठिन शब्दों की अदायगी न समझपाने के कारण ग़ज़ल प्रेमी आम श्रोता इसका भरपूर आनंद न उठा सके। फिर भी गायी गयी ग़ज़लों के कुछ सीधे साधे अशआर पर श्रोताओं ने खुलकर दाद दी और संगीत के साथ-साथ शेरों का आनंद भी उठाया। ऐसे ही शेरों में नरेश कुमार शाद की ग़ज़ल का ये शेर काफी पसंद किया गया।

ये तो मुमकिन है किसी रोज़ खुदा बन जाये।
ग़ैर मुमकिन है मगर शेख़ का इंसां होना।

इसी तरह अतहर राज़ की ग़ज़ल के इस शेर ने भी श्रोताओं को काफी प्रभावित किया।

जिसे हम न कह सकें तुम कहो,
जिसे तुम न कह सको हम कहें,

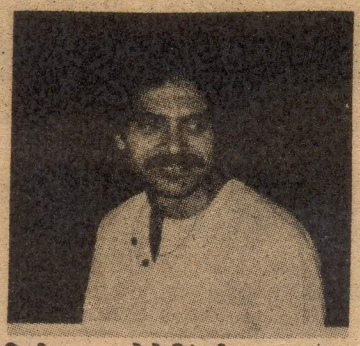

किसी तरह गुज़रे ये ज़िंदगी,
किसी तरह किस्सए ग़म कहें।

इश्क़ो मोहब्बत की दास्तान शुरू होने में दर असल हुस्नो इश्क़ दोनों ही बराबर के दोषी होते हैं, ये अलग बात है कि पहले हुस्न की तरफ से हौसला अफज़ाई होती है। इस भेद को 'अतहर राज़' ने जितने अच्छे अंदाज़ में कहा है उससे भी खूबसूरत ढंग से श्री वर्मा अपनी गायकी में प्रस्तुत करके सोने पे सुहागा वाली कहावत चरितार्थ कर दी।

" हम शौक की मंज़िल में ख़तावार हैं लेकिन,
पहले तेरी जानिब से इशारा भी तो होगा।
जी हार के बैठे हैं मगर सोच रहे हैं
दिल जीतने वाला कभी हारा भी तो होगा।

इसके अलावा श्री वर्मा द्वारा प्रस्तुत उस्ताद कमर जलालवी की पूरी ग़ज़ल को श्रोताओं ने बड़ी तनमयता से सुना और काफी दाद दी। जैसा कमाल था वैसी ही दिल को छू लेने वाली तर्ज़ ने संगीत तथा ग़ज़ल प्रेमियों को काफी देर तक बांधे रखा।

असर है उन पे भी कुछ दर्द के फ़साने का,
बदलता जाता है अंदाज़ मुस्कुराने का।
निगाहे नाज़ का ममनून क्यों न हूं मैं
"कमर",
शऊर आ गया मुझको फरेब खाने का।

श्री वर्मा के साथ हारमोनियम पर मदन चौहान, तबले पर महेंद्र चौहान, मेंडोलियन पर सरदार जसबीर सिंह तथा तानपुरे पर मृदुला आयर की संगत ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया।